सर्व शिक्षा अभियान के अंन्तर्गत सेवाकालीन शिक्षक–प्रशिक्षण के प्रभावशीलता का अध्ययन्, अध्यापक की सोच द्धारा करना

बरकतउल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल (म.प्र.)

की

मास्टर आफ एजुकेशन

(एलेमेन्ट्री एजुकेशन) उपाधि

के लिए

आंशिक संम्पूर्ति हेतु प्रस्तुत

लघुशोध
वर्ष (2007–08)

मार्गदर्शक

ड़ॉ. एस.पी.मिश्रा
रीड़र
क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान
श्यामला हिल्स, भोपाल
(म.प्र.)–462013

शोधकर्ता

सिद्धार्थ शुक्ला
एम.एड़. (प्रारंभिक शिक्षा)
क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान
श्यामला हिल्स, भोपाल
(म.प्र.)–462013

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद
श्यामला हिल्स, भोपाल (म.प्र.)–462013
फोन –(0755) 2661301 से 3,2661305
फैक्स (0755) 2661305
ई–मेल : rioe_2006@data.in

सर्व शिक्षा अभियान के अंन्तर्गत सेवाकालीन शिक्षक–प्रशिक्षण के प्रभावशीलता का अध्ययन्, अध्यापक की सोच द्वारा करना

बरकतउल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल (म.प्र.)

D-263

की

मास्टर आफ एजुकेशन

(एलेमेन्ट्री एजुकेशन) उपाधि

के लिए

आंशिक संम्पूर्ति हेतु प्रस्तुत

लघुशोध

वर्ष (2007–08)

मार्गदर्शक

ड़ॉ. एस.पी.मिश्रा
रीड़र
क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान
श्यामला हिल्स, भोपाल
(म.प्र.)–462013

शोधकर्ता

सिद्धार्थ शुक्ला
एम.एड़. (प्रारंभिक शिक्षा)
क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान
श्यामला हिल्स, भोपाल
(म.प्र.)–462013

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद
श्यामला हिल्स, भोपाल (म.प्र.)–462013
फोन –(0755) 2661301 से 3,2661305
फैक्स (0755) 2661305
ई–मेल : rioc_2006@data.in

प्राक्कथन

शैक्षिक क्षेत्र में कोई भी सफलता मुख्यतः शिक्षकों की सक्रिय एवं निष्ठापूर्ण भूमिका पर ही निर्भर है, इस दृष्टि से यह नितांत आवश्यक है, कि शिक्षकों के सतत् एवं समग्र शिक्षण ,प्रशिक्षण एवं सशक्तिकरण को आवश्यक महत्व प्रदान किया जाए। **सर्व शिक्षा अभियान के तहत प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षकों का आवासीय प्रशिक्षण कार्यक्रम इसी दिशा में महत्वपूर्ण कदम है।**

वास्तव में हर शिक्षक इस स्थिति का सामना करता है, कि बच्चे एकरूप न होकर विविध होते हैं। उनके सीखने के तरीके ,स्तर गतियाँ सब कुछ भिन्न होते हैं, न ही रोज नियमित हो पाते हैं। खास तौर पर गरीब परिवारों से आने वाले बच्चे जिनकी जरूरतों के लिये अब हमारी शिक्षा व्यवस्था सबसे महत्वपूर्ण जरिया है । इसके अलावा अधिकांश शिक्षकों को किसी न किसी कारण से एक से अधिक कक्षा संभालनी पड़ती है वहीं एक कक्षा के अंदर विविधता हो, वहाँ बहुकक्षा स्थिति तो और भी कठिनाई पैदा कर देती है ।

शिक्षा कोई भौतिक वस्तु नहीं है, जिसे शिक्षक या एक ड़ाक के जरिए कहीं पहुँचा भर दिया जा सके । शिक्षा की जड़े हमेशा बच्चों की भौतिक और सांस्कृतिक जमीन में गहरे पैठी होती हैं और उन्हें माता –पिता ,शिक्षकों ,सहपाठियों और समुदायों के साथ पारस्परिक क्रियाओं से पोषण मिलता है ,इस दायित्व के संदर्भ में शिक्षकों की भूमिका और प्रतिष्ठा को रेखांकित करने और सुदृढ़ करने की जरूरत हैं। ज्ञान के सृजन में हमेशा ही पारस्परिक अंन्तनिहित होती है, अगर बच्चे को निष्क्रिय रहने को मजबूर न किया जाए, तो इस आदान –प्रदान में शिक्षक भी सीखता हैं, चूंकि बड़ों के मुकाबले बच्चों की अवलोकन और अनुभूति में अधिक गहराई होती है ।ज्ञान के सूचक के रूप में उनकी संभावनाओं की हमें अधिक समक्ष होनी चाहिए।

इस लघुशोध में काफी विश्लेषण और सलाह है । यह शोध इतना समृद्ध और व्यापक न होता अगर इसकी रचना प्रक्रिया से जुड़े सभी लोग एक खास तरंह ही ज्वाला के धेरे में न होते।यह लघु शोध इस दिशा में आगे बढ़ने के रास्ते/उपाय/तरीके सुझाता है। यहाँ सुझाई गई कुछ व्यवस्थागत तब्दीलियें से जरूर ही इसमें मदद मिलेगी ।

शोधकर्ता

सिद्धार्थ शुक्ला

एम.एड़. (प्रारंभिक शिक्षा)
क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान
श्यामला हिल्स, भोपाल
(म.प्र.) 462013

प्राक्कथन

शिक्षा जीवन पर्यात चलने वाली एक ऐसी प्रक्रिया है जो मनुष्य की आंतरिक एवं बाह् शक्तियों को निरंतर विकास के पथ पर अग्रसर करती है " **सा विद्या या विभुक्तयें** " अर्थात मुक्ति प्रदान करने वाली ही विद्या है ।यह मुक्ति समाज में व्याप्त कुरूतियों –अलगाव ,हिंसा ,द्वेष ,बैर आदि से है।

इनसे मुक्त कर परस्पर प्रेम ,दया ,करूणा ,सहयोग सौहार्द ,एवं मानवीय मूल्यों का मनुष्य के अंदर विकास करना ही शिक्षा का परम उद्धेश्य है, इस उद्धेश्य की प्राप्ति में शिक्षक एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है, अतः समय –समय पर शिक्षक को अपने विषय के साथ–साथ अन्य समाज एवं राष्ट्रपयोगी बातों की जानकारी देना अत्यंन्त आवश्यक है।

सर्व शिक्षा अभियान के अंन्तर्गत आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम में उन सभी बातों पर विशेष ध्यान दिया जाता है, जिन्हें आत्मसात कर बच्चों में उत्तम संस्कारों के संवर्द्धन हेतु शिक्षक अपना विशेष मार्गदर्शन देता है, जिससे बच्चों का सर्वांगीण विकास किया जा सके ।

आशा करते हैं, हमारे गुरूजन राष्ट्र की प्रगति में निरंन्तर अपना योगदान देते रहेंगे ।

प्राचार्य

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान ,

भोपाल

Regional Institute of Education
LIBRARY

आभार

लघु शोध की रूपरेखा का वर्तमान रूप और आकार उन विचारों का परिणाम है, जिसकी रचना विभिन्न विषयों के प्रतिष्ठित व्याख्याताओं ,शिक्षकों ,मित्रों, जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान के सदस्य, राज्य शिक्षा केन्द्र भोपाल एवं विभिन्न स्तरों पर मौजूद अन्य गणधारियों के गहन विचार –विमर्श से हुई। शोध कार्य को पूर्ण होने के लिए मैं सबसे पहले धन्यवाद् देना चाहता हूँ ईश्वर को ,जिन पर विश्वास करने से कोई भी काम सरलता से पूर्ण हो जाता है ।

मैं आभारी हूँ क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान के एच.ओ.डी, ड़ॉ. जी.एन.पी. श्रीवास्तव जी का जिन्होंने सेमीनार के माध्यम से आयोजन करवाकर हमें मार्गदर्शन एवं सुझाव दिये । मैं धन्यवाद् देना चाहता हूँ अपने मार्गदर्शक ड़ॉ. एस.पी.मिश्रा जी का जिन्होंने हमें अच्छा सहयोग व मार्गदर्शन दिया ।

हम आभारी हैं, ड़ॉ. यू.एल.लक्ष्मीनारायण एवं ड़ॉ. एस.के. गुप्ता जी का जिन्होंने अपना बहुमूल्य योगदान लघुशोध पूर्ण कराने में मदद् की। मैं शुक्रिया अदा करना चाहता हूँ ,संस्थान के प्रतिष्ठित व्याख्याताओं, ड़ॉ. रमेश बाबू, ड़ॉ. के.के.खरे, ड़ॉ. पैइली, ड़ॉ. मयंक श्रीवास्तव, श्री संजय पंड़ागले, श्रीमती ड़ॉ. सुनीती खरे एवं संस्थान के अन्य सदस्यों का जिन्होंने लघु शोध पूर्ण कराने में काभी योगदान दिया और मैं आभारी हूँ,अपने मित्रों का जिन्होंने हमें अपना बहुमूल्य योगदान लघु शोध तैयार करवाने में दिया। व हम उन सभी के प्रति कृतज्ञ हैं, जिन्होंने इस शोध के पूर्ण करवाने में सहयोग दिया।

शोधकर्ता

Regional Institute of Education
LIBRARY

सिद्धार्थ शुक्ला
एम.एड़. (प्रारंभिक शिक्षा)
क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान
श्यामला हिल्स, भोपाल
(म.प्र.) 462013

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान
(राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद)
श्यामला हिल्स ,भोपाल –462013
तार : शिक्षक
पी.बी.एक्स : 2661301 से 3,2661305
फैक्स : 0755–2661668
ई –मेल : rioe_2006 @dataone.in

Regional Institute of education
(National council of education Research & Training)
Shyamla hills ,Bhopal -462013
Gram : Educator
PBX : 2661301 to 3,2661305
Fax : 0755-2661668
E-mail: rioe _2006@dataone.in

प्रमाण –पत्र

प्रमाणित किया जाता है, कि श्री **सिद्धार्थ शुक्ला** S/o श्री जे. शुक्ला, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान (एन.सी.ई.आर.टी.) श्यामला हिल्स, भोपाल में एम.एड़. (प्रारंभिक शिक्षा) के नियमित छात्र हैं। इन्होंने बरकतउल्ला विश्वविद्यालय ,भोपाल से शिक्षा में स्नातकोत्तर उपाधि करने हेतु प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध "**सर्व शिक्षा अभियान के अंन्तर्गत सेवाकालीन शिक्षक –प्रशिक्षण के प्रभावशीलता का अध्ययन, अध्यापक की सोच द्वारा करना**" मेंरे मार्गदर्शन में पूर्ण किया है। यह शोध कार्य इनकी निष्ठा ,मेहनत एवं लगन से किया गया मौलिक प्रयास है,जो पूर्व में इस आशय से विश्वविद्यालय में प्रस्तुत नहीं किया गया है।

प्रस्तुत शोध प्रवंध, बरकतउल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल की एम.एड़. (प्रारंभिक शिक्षा) परीक्षा,सन् 2007–08 की आंशिक संम्पूर्ति हेतु प्रस्तुत किए जाने योग्य है ।

स्थान : भोपाल
दिनांक : 11/04/08

निदेशक

डॉ. एस. पी. मिश्रा
रीडर
क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान,
श्यामला हिल्स ,भोपाल
(म.प्र.) 462013

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान
(राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्)
श्यामला हिल्स ,भोपाल –462013
तार : शिक्षक
पी.बी.एक्स : 2661301 से 3,2661305
फैक्स : 0755–2661668
ई –मेल : rioe_2006 @dataone.in

Regional Institute of education
(National council of education Research & Training)
Shyamla hills ,Bhopal -462013
Gram : Educator
PBX : 2661301 to 3,2661305
Fax : 0755-2661668
E-mail: rioe _2006@dataone.in

घोषणा–पत्र

मैं श्री **सिद्धार्थ शुक्ला** S/o श्री ज. शुक्ला (सहायक भूजल विद्),यह घोषणा करता हूँ कि "**सर्व शिक्षा अभियान के अंर्न्तगत सेवाकालीन शिक्षक –प्रशिक्षण के प्रभावशीलता का अध्ययन् , अध्यापक की सोच द्धारा करना**" नामक विषय पर लघु–शोध प्रवंध सन् 2007–08 में डॉ.एस.पी.मिश्रा, रीडर, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, श्यामला हिल्स,भोपाल के मार्गदर्शन में किया।

यह लघु–शोध प्रवंध मेंरे द्धारा बरकतउल्ला विश्वविद्यालय भोपाल की **एम.एड़. (प्रारंभिक शिक्षा),** नियमित, सन् 2007–08 उपाधि की परीक्षा के लिए आंशिक संम्पूर्ति हेतु प्रस्तुत किया जा रहा है। इस शोध में दिये गये आंकड़े एवं सूचनायें विश्वसनीय स्त्रोतों तथा मूल स्थानों से प्राप्त किये गये हैं। यह प्रयास पूर्णतः मौलिक है।

स्थान : भोपाल

दिनांक : 11/04/2008

शोधकर्ता
सिद्धार्थ शुक्ला
एम.एड़. (प्रारंभिक शिक्षा)
क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान
श्यामला हिल्स, भोपाल
म.प्र. (462013)

अनुक्रमणिका

क्रमांक	पाठ का नाम	पृष्ठ संख्या
I	प्राक्कथन	1
II	आभार	3
III	प्रमाण–पत्र	4
IV	धोषणा–पत्र	5
1	प्रथम अध्याय	
1.0	शोध परिचय	12
1.1	प्रस्तावना	13
1.2	सर्व शिक्षा अभियान	14
↳ 1.2.1	प्रस्तावना	14
↳ 1.2.2	सर्व शिक्षा अभियान के प्रमुख उद्धेश्य एवं लक्ष्य	14
↳ 1.2.3	सर्व शिक्षा अभियान की प्रमुख विशेषता	14
↳ 1.2.4	सबके लिए शिक्षा धोषणा पत्र	15
↳ 1.2.5	प्राथमिक शिक्षा का सर्वभौमिकरण	16
↳ 1.2.6	सर्व शिक्षा अभियान के निर्माणक अंग	16
↳ 1.2.7	सर्व शिक्षा अभियान के कायक्रमों की योजना	16
1.3	सेवा कालीन शिक्षक –प्रशिक्षण	
↳ 1.3.0	प्रस्तावना	17
↳ 1.3.1	शिक्षक –प्रशिक्षण का अर्थ	17
↳ 1.3.2	शिक्षक –प्रशिक्षण के प्रकार	17
	◆ सेवाकालीन शिक्षक–प्रशिक्षण	18
	◆ परिचात्मक शिक्षक–प्रशिक्षण	18
↳ 1.3.3	शिक्षक –प्रशिक्षण के उद्धेश्य	18
↳ 1.3.4	शिक्षक –प्रशिक्षण के लक्ष्य	19
↳ 1.3.5	सेवाकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन	20
↳ 1.3.6	अनुभवजन्य व सहभागिता प्रशिक्षण	20

1.4 शिक्षक – प्रशिक्षण का विकास 21

↳ 1.4.1 प्राचीन काल 21

↳ 1.4.2 मध्यकाल 21

↳ 1.4.3 आधुनिक पद्धति का आरंम्भ 22

↳ 1.4.4 बुड़ का धोषणा पत्र (1854) 22

↳ 1.4.5 हंटर कमीशन (1882) 22

↳ 1.4.6 शिक्षा नीति प्रस्ताव (1904) 22

↳ 1.4.7 कलकत्ता वि.वि.आयोग (1919) 22

↳ 1.4.8 हर्टाग समिति (1929) 22

1.5 अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व 23

↳ 1.5.1 गतिविधि क्यों,क्या और कैसे 23

↳ 1.5.2 सहायक शिक्षण सामग्री 23

↳ 1.5.3 कक्षा व्यवस्था एवं प्रवंधन 23

↳ 1.5.4 बहुकक्षा एवं बहुस्तरीय शिक्षण 23

↳ 1.5.5 मूल्यांकन का विश्लेषण 23

↳ 1.5.6 लिखने पढ़ने के कौशल 23

1.6 शोध का शीर्षक 24

1.7 शोध समस्या का कथन 24

1.8 शोध के उद्धेश्य 25

1.9 शोध की परिकल्पना 25

↳ 1.9.1 परिकल्पना का अर्थ 25

↳ 1.9.2 परिकल्पना के प्रकार 26

↳ 1.9.3 परिकल्पना कथन के स्वरूप 26

↳ 1.9.4 परिकल्पना के गुण 26

↳ 1.9.5 परिकल्पना का परीक्षण 27

↳ 1.9.6 शोध के लिए परिकल्पनाएँ 27

1.10 शोध का क्षेत्र :— 28

2 द्वितीय—अध्याय 29

2.0 संम्वंधित साहित्य का पुनरावलोकन

↳ 2.1 प्रस्तावना 30

↳ 2.2 संम्वंधित साहित्य का अर्थ 30

↳ 2.3 संम्वंधित साहित्य के अध्ययन का महत्व 30

↳ 2.4 संम्वंधित साहित्य के सर्वेक्षण का कार्य 31

↳ 2.5 संम्वंधित साहित्य के सर्वेक्षण से लाभ 31

↳ 2.6 संम्वंधित साहित्य के पुनरावलोकन का विशिष्ट उद्धेश्य 31

↳ 2.7 संम्वंधित शोध कार्यों का पुनरावलोकन 32

⇨ [redacted] मालवीय (1968) 32
⇨ [redacted] गुप्ता (1982) 32
⇨ [redacted] पाटिल (1988) 33
⇨ [redacted] तिवारी (1991) 33
⇨ [redacted] राजपूत (1996) 34
⇨ [redacted] गुप्ता (1996) 34
⇨ [redacted] भदौरिया (1997—98) 34
⇨ [redacted] एन.वैक्टैपाह(1998) 35
⇨ [redacted] कुलश्रेष्ठ (2002—03) 36
⇨ [redacted] सोलंकी (2005—06) 37
⇨ [redacted] शर्मा (2005—06) 39

3 तृतीय—अध्याय

3.0 अनुसंधान योजना की तकनीक 40

3.1 प्रस्तावना 41

3.2 समस्या कथन 41

3.3 अध्ययन के लिए उपयेागी अनुसंधान विधि 41

3.3.1 वर्णनात्मक / सर्वेक्षण विधि 41

◆ अर्थ

- ♦ सर्वेक्षण संम्वंधी आकड़े संग्रह करने के उद्धेश्य
- ♦ सर्वेक्षण अध्ययन के साधन व उपकरण

↳ 3.3.2 प्रयोगात्मक अनुसंधान विधि
↳ 3.3.3 ऐतिहासिक विधि

3.4 न्यादर्श का चयन
↳ 3.4.1 अर्थ व परिभाषा 42
↳ 3.4.2 न्यादर्श का विवरण 43
↳ 3.4.3. न्यादर्श का वर्गीकरण 43
↳ 3.4.4 न्यादर्श चयन के लिए संम्वंधित संस्थान 43

3.5 शोध के चर
↳ 3.5.1 अर्थ व परिभाषा 44
↳ 3.5.2 स्वतंत्र चर 44
↳ 3.5.3 आश्रित चर 44
↳ 3.5.4 लिंग 44
↳ 3.5.5 योग्यताएँ 44
↳ 3.5.6 अनुभव 44
↳ 3.5.7 कलस्टर रिसोर्स सेन्टर 44
↳ 3.5.8 क्षेत्र 45

3.6 शोध संम्वंधी उपकरण
↳ 3.6.1 प्रस्तावना 45
↳ 3.6.2 उपकरण अभिज्ञान मापनी 45
↳ 3.6.3 अभिज्ञान मापनी का विवरण 45
↳ 3.6.4 प्रशिक्षक सामग्री से लिये गये कथन 46

3.7 शोध उपकरणों का प्रशासन एवं फलांकन 46
3.8 लधु शोध उपकरण के अंकन की विधि 46
3.9 प्रदत्तों के संकलन में कठिनाइयाँ 47
3.10 सांख्यिकी प्रविधियाँ 47

4 चतुर्थ –अध्याय 48

↳ 4.1 प्रस्तावना 49
↳ 4.2 आंकड़ों के विश्लेषण के लिए सांख्यिकी का उपयोग 49
↳ 4.2.1 आंकडों का अर्थ 49
↳ 4.2.2. सांख्यिकी का अर्थ व परिभाषा 49
↳ 4.2.3 सांख्यिकी की आवश्यकता एवं उपयोगिता 50
↳ 4.2.4 उपयोगी ग्राफ 50
↳ आंकडों का वर्गीकरण 50
♦ प्रसार 51
♦ वर्ग अंन्तराल 51
♦ मध्यमान की गणना 51
♦ प्रमाणिक विचलन 52
♦ टी –परीक्षण 52
♦ एफ–परीक्षण 53
♦ सार्थकता स्तर 54
♦ स्वतंत्रांश 54

↳ 4.3 शिक्षक –प्रशिक्षण की जानकारी 54
↳ 4.4 अभिज्ञान मापनी का सारांश वर्णन 58
↳ 4.5 परिकल्पना नं. 1 67
↳ 4.6 परिकल्पना नं. 2 72
↳ 4.7 परिकल्पना नं. 3 77
↳ 4.8 परिकल्पना नं. 4 82
↳ 4.9 आंकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या 85
↳ 4.10 परिकल्पना का सारांश 86

5 पंच्चम –अध्याय 87

↳	5.1	प्रस्तावना	88
↳	5.2	संक्षेपिका	88
↳	5.3	प्रशिक्षण का अध्यापक की सोच पर प्रभाव	88
↳	5.4	निष्कर्ष	89
↳	5.5	सुझाव	91
↳	5.6	भावी शोध हेतु सुझाव	91

- संन्दर्भ ग्रंथ सूची 93
- सार संक्षेप 95
- परिशिष्ट –I अभिज्ञान मापनी 100
- परिशिष्ट –II तालिका (ड़ी) 103
- परिशिष्ट –II क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान ,भोपाल द्वारा ड़ाटा संकलन के लिए लिखित पत्र 104